शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 4, pp (111-115), Month: Dec. 2018

वर्तमान में हिन्दी

जितेन्द्र कौर
हिन्दी प्रवक्ता, सी.एम.के. नेशनल पी.जी गर्ल्ज कॉलेज़, सिरसा
Email :jitendrasodhi97@gmail.com

सारांश

''हिन्दी हमारी शान है, देश का अभिमान है''

मानव जीवन में भाषा का अत्याधिक महत्व है, क्योंकि वह भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का मुख्य साधन है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसे अपने भावों, विचारों और अनुभवों आदि को दूसरों तक पहुँचाने तथा दूसरों के विचारों को ग्रहण करने का माध्यम भाषा है। भाषा एक सामाजिक वस्तु है जिसे समाज से अर्जित किया जाता है, अनुकरण द्वारा सीखा जाता है, इसका संबंध सम्पूर्ण समाज में रहता है।

प्रस्तावना

''भाषा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की भाष् धातु से हुई जिसका अर्थ ''वाणी को प्रकट करना।'' ''वर्णों में व्यक्त सार्थक वाणी।''[1]

भाषा के विविध रूप–

''भाषा को कई रूपों में विभाजित किया गया है जैसे कि क्षेत्रगत, समाजगत, राजगत और विषयगत स्वरूप विविध रूपों में प्रचलित है। सर्वप्रथम भाषा का संबंध और उसका रूप व्यक्ति की निजी बोली से जिसमें मुख से उच्चारित सार्थक व्यक्ति ध्वनि संकेतों की समष्टि बनी रहती है। परिनिष्ठत भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा।''[2]

भारतीय विद्वान पंतजलि के अनुसार– ''व्यक्ता वाचि वाणी येषां त इसे व्यक्तवायः''[3]

श्री कमला प्रसाद गुरू– ''भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार भाव स्पष्टतयः समझ सकता है।''[4]

डॉ० बाबू राम सक्सेना–''जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार–विनियम करता है उनको समष्टि रूप से भाषा कहते है।''[5]

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार

क्रोचे के अनुसार–''भाषा उस स्पष्ट, सीमित तथा सुगंठित ध्वनि को कहते हैं, जो अभिव्यंजना के लिए नियुक्ति की जाती है।''[6]

हैनरी स्वीट के अनुसार– " जिन व्यक्त ध्वनियों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति होती है उसे भाषा कहते हैं।''[7]

ब्रिटेन के विष्वकोष के अनुसार–

''भाषा व्यक्त ध्वनि चिह्नों की उस पद्धति को कहते हैं जिसके माध्यम से प्रत्येक समाज के दल एवं संस्कृति के मानने वाले सदस्य पारस्परिक विचार–विनियम किया करते हैं।''[8]

भारतीय और पाश्चात्य विद्वनों द्वारा दी गई परिभाषाओं के आधार पर निम्नलिखित तथ्य प्राप्त हुए हैं–

1. भाषा एक सामाजिक वस्तु है।
2. भाषा ध्वनि संकेतों का प्रयोग होता है तो रूढ़ व परम्परागत होते हैं परन्तु आवश्यकतानुसार नए भी निर्मित किए जा सकते हैं।
3. ध्वनि संकेतों से वक्ता और श्रोता पारस्परिक भावों और विचारों का विनियम करते हैं।
4. ध्वनि संकेत सार्थक होते हैं इनका अध्ययन वर्गीकरण और विश्लेषण किया जा सकता है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि ''भाषा यादर्षच्छिक उच्चारित ध्वनि प्रतीक की वह सार्थक समष्टि है जिसके माध्यम से किसी समाज अथवा वर्ग विशेष के मानव परस्पर भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं।''[9]

मुस्लमानों के शासन में सर्वप्रथम हिन्दी शब्द का प्रयोग भाषा के रूप में मिलता है। यद्यपि हिन्दी शब्द का प्रयोग काफी पुराना है और हिंद से बना है। प्रयोग तथा रूप की दृष्टि से हिन्दी शब्द हिंदी भाषा या खड़ी बोली का शब्द न होकर फारसी का है, सभी भारतीय भाषाओं का विकास संस्कृत से स्वीकार किया जाता है। भाषा वैज्ञानिक इन्हें भारतीय परिवार की भाषा ईरानी शाखा में रखते है। वैद्धिक संस्कृत से क्रमशः लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी आदि आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हुआ है। हिन्दी देश की राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा है। अतः स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रभाषा और राजभाषा के बीच के सम्बन्ध सूत्रों को स्पष्ट किया जाए। प्रायः राज्य में अथवा समग्र देश में अधिकाधिक बोली, लिखी तथा समझी जाने वाली कोई भाषा ही उस देश की राष्ट्रभाषा कहलाती है और परम्परा यह है कि किसी भी देश की राष्ट्रभाषा ही उस देश की राजभाषा भी हो जाती है। अगर जहां राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय उद्‌बोधक की क्षमता जनमानस के आदर्शों और अभिलाषाओं की स्मृर्ति के लिए बैचेन तथा उनके भौतिक आध्यात्मिक चिंतन को अभिव्यक्त करने के सामर्थ्य से सम्पन्न साहित्य कृतित्व की गरिमा से मंडित सर्वग्राह्य सरल लिपि में लिखी जाती है। वहां राजभाषा जनमानस की भावनाओं–सपनों–चिंतनों से सीधे–सीधे न जुड़कर एक अनौपचारिक माध्यम के रूप में प्रशासन तथा प्रकाशित के बीच सेतु का कार्य करती है, यह भाषा भी राज्य अथवा देश के बहुमत द्वारा बोली, लिखी, समझी जाती है।

हिन्दी हमारे देश की राष्ट्र भाषा एवं राजभाषा है। 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। इसी कारण 14 सितम्बर को राष्ट्रीय हिन्दी दिवस मनाया जाता है। 26 जनवरी 1950 में संविधान लागू होने पर हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया। संविधान की आठवीं अनुसूची, भाग–17 और अनुच्छेद 343 से 351 राजभाषा हिन्दी से संबंधित है।

वर्तमान मे हिन्दी का बढ़ता प्रयोग–

आज का युग सूचना क्रांति का है। हिन्दी संस्कृति की जननी है। लिपि शब्दावली की दृष्टि से हिन्दी संस्कृत पर आधारित है और संस्कष्त को देवभाषा इसी अर्थ में कहा जाता है कि वह पूर्ण समृद्ध है। यहां ज्ञान–विज्ञान का निरंतर विकास हो रहा है। परस्पर सम्पर्क बढ़ता जा रहा है। ऐसी दशा में वह भाषा सर्वप्रिय और सर्वोपयोगी मानी जाती है जो अन्तर्राष्ट्रीय सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। हिंदी भाषा गुण एवं गणना की दषष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय भाषा की सम्पूर्ण एवं सम्भावना रखती है। वर्तमान परिदष्श्य में हिंदी समूचे विश्व के आकर्षण का केन्द्र बनती जा रही है। भाषा के समान्यतः दो रूप माने जाते हैं– सामान्य अभिव्यक्तिपरक रूप और प्रगतिपरक अभिव्यक्ति रूप। अभिव्यक्तिपरक रूप में हिन्दी भाषा जिसमें प्रेम, सद्भाव सहिष्णुता आदि मानवीय संवेदनशीलता की प्रबलता और प्रगाढ़ता है। हिन्दी केवल भाषा ही नहीं वरन् राष्ट्रीय एकता की कड़ी है। भारतीय जन–मानस की सर्वांगीण अभिव्यक्ति है जातीयता, क्षैत्रीयता, प्रान्तीयता, धर्मान्धता एवं संर्कीणता के दायरे तोड़कर विश्व भाषाओं के साहचर्य में वैज्ञानिक संस्कषति की निभ्रंति नियोजिका है। प्रगतिपरक भाषा का सम्बन्ध ज्ञान–विज्ञान तकनीकी क्षेत्र से रहता है। ज्यों–ज्यों विकास के चरण बढ़ते है उसी प्रकार भाषा की उपयोगिता भी बढ़ती जाती है। किसी भी भाषा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने को प्रस्थापित होने के लिए उसे अपनी प्रमाणिक, अपनी शुद्धता, अपनी वैज्ञानिकता सिद्ध करनी होती है। हिन्दी भाषा की वैज्ञानिकता शुद्धता के लिए समय–समय पर भारत सरकार विभिन्न मंत्रालयों द्वारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग गठित किए गए एवं शब्दकोश प्रकाशित करवाए जा रहे हैं। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक क्षेत्र खुल गए हैं और खुलते जा रहे हैं– चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, शिक्षा कम्प्यूटर, यातायात, मीडिया, विज्ञान, औद्योगिक, आकाशवाणी दूरदर्शन आदि अनके क्षेत्र हैं।

व्यापारिक क्षेत्र में बढ़ता हिन्दी का प्रयोग हिन्दी उपभोक्ता समाज की भाषा है। आज उपभोक्ता को अपने उत्पादों को बेचना है, जरूरी सूचनायें, उत्पादों के विज्ञापन हिन्दी भाषाई लोगों के बीच करना है। यही कारण है कि दूरदर्शन पर विदेशी चैनल हिन्दी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। फिल्मों द्वारा भी हिन्दी की लोकप्रियता विभिन्न देशों में बढ़ रही है। यही कारण है विभिन्न देशों की कम्पनियाँ, संस्थान हिन्दी के प्रयोग में रूचि ले रहे हैं।

कम्प्यूटर आरम्भ में विदेशी यंत्र था जिसे 1984 में लोगों ने देखा था। यह अंग्रेजी का गुलाम था। कम्प्यूटर में न हिन्दुस्तानी ज्ञान को महत्व दिया न यहां की भाषा को परन्तु हमारे भारतीय इंजीनियरों ने एक ऐसी तकनीक विकसित की जिसके माध्यम से कम्प्यूटर हिंदी की लिपि देवनागरी में भी काम कर रहा है। आज कम्प्यूटर में हिन्दी फॉन्ट के कारण रेल विभाग, बैंक आदि में प्रयुक्त हो रहा है। इस नई तकनीक से कम्प्यूटर में नये हिन्दी सोफ्टवेयर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। ज्यों–ज्यों दुनिया ग्लोबल हो रही है हिन्दी की मांग भी बढ़ती जा रही है। आज बोलने वालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद दूसरे स्थान पर हिन्दी भाषा है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर प्रशासनिक, व्यावसायिक तथा वैचारिक गतिविधियों को चलाने वाली सबसे बड़ी भाषा बनी हुई है। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी का बढ़ता प्रयोग– यह सत्य है कि

हिन्दी में अंग्रेजी के स्तर की विज्ञान और प्रौद्योगिक पर आधारित पुस्तकें नहीं। उसमें ज्ञान–विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय सामग्री की दरकार है लेकिन विगत कुछ वर्षों से प्रयास हो रहे हैं। हाल ही में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिन्दी माध्यम में एम.बी.ए. का पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया। इसी प्रकार अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाएं हिंदी में रूपांतरित होने लगी। इस प्रकार हिन्दी वैश्विक संदर्भ देने में उपग्रह–चैनेलों, विज्ञापन, एजैंसियों, बहुराष्ट्रीय, निगमों तथा यात्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। खेल चैनेलों में भी हिन्दी में कमैंट्री की जाती है।

आज विश्व में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी में पढ़े जाते हैं। विश्व व्यापी स्तर पर ई–मेल, ई–कॉमर्स, एम.एम.एस, एवं वेब जगत में बड़ी सहजता से पाया जाता है। इस प्रकार हिन्दी जनसंचार–माध्यमों की सबसे प्रिय एवं अनुकूल भाषा बन गई है।

निष्कर्षतः हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी लोकप्रियता बना चुकी है। चीनी भाषा के बाद दूसरे स्थान पर हिन्दी भाषा है। हमारे देश के नेताओं ने अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी भाषा में भाषण देकर उसकी उपयोगिता को उद्घोष किया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षा साहित्य प्रशासन और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विकास की ओर बढ़ रही है। हमें हिन्दी भाषा के विकास में निरंतर योगदान देते रहना चाहिए। हिन्दी सभी द्वारा समझी, बोली जाने वाली भाषा है। हमें विश्व स्तर पर हिंदी भाषा के विकास के लिए योगदान देना चाहिए।

सन्दर्भ

1. *'भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी'* : डॉ० रत्न चन्द्र शर्मा, कपूर पब्लिकेशन्ज, रेलवे रोड़ करनाल, पृ० **57**
2. *'भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा'* : डॉ० नारायण दास समाधिया, कला सदन, खुरजा, पृ० **30**
3. *'भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी'* : डॉ० रत्न चन्द्र शर्मा, कपूर पब्लिकेशन्ज, रेलवे रोड़ करनाल, पृ० **57**
4. *'भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी'* : डॉ० रत्न चन्द्र शर्मा,कपूर पब्लिकेशन्ज, रेलवे रोड़ करनाल, पृ० **58**
5. *'भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी'* : डॉ० रत्न चन्द्र शर्मा,कपूर पब्लिकेशन्ज, रेलवे रोड़ करनाल, पृ० **58**
6. *'भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी'* : डॉ० रत्न चन्द्र शर्मा, कपूर पब्लिकेशन्ज, रेलवे रोड़ करनाल, पृ० **59**
7. *'भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी'* : डॉ० रत्न चन्द्र शर्मा, कपूर पब्लिकेशन्ज, रेलवे रोड़ करनाल, पृ० **60**

8. *'भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी'* : डॉ० रत्न चन्द्र शर्मा, कपूर पब्लिकेशन्ज, रेलवे रोड़ करनाल, पृ० **60**
9. *'भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी'* : डॉ० रत्न चन्द्र शर्मा, पृ०कपूर पब्लिकेशन्ज, रेलवे रोड़ करनाल, **61**
10. *'वर्तमान परिदृश्य में हिन्दी'* : डॉ० सचिन कुमार, भारत दर्शन 2015–16